ISSN 0973-2616

सी एस आई आर समाचार

वर्ष 26 अंक 1 जनवरी 2009

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् का गृह-बुलेटिन

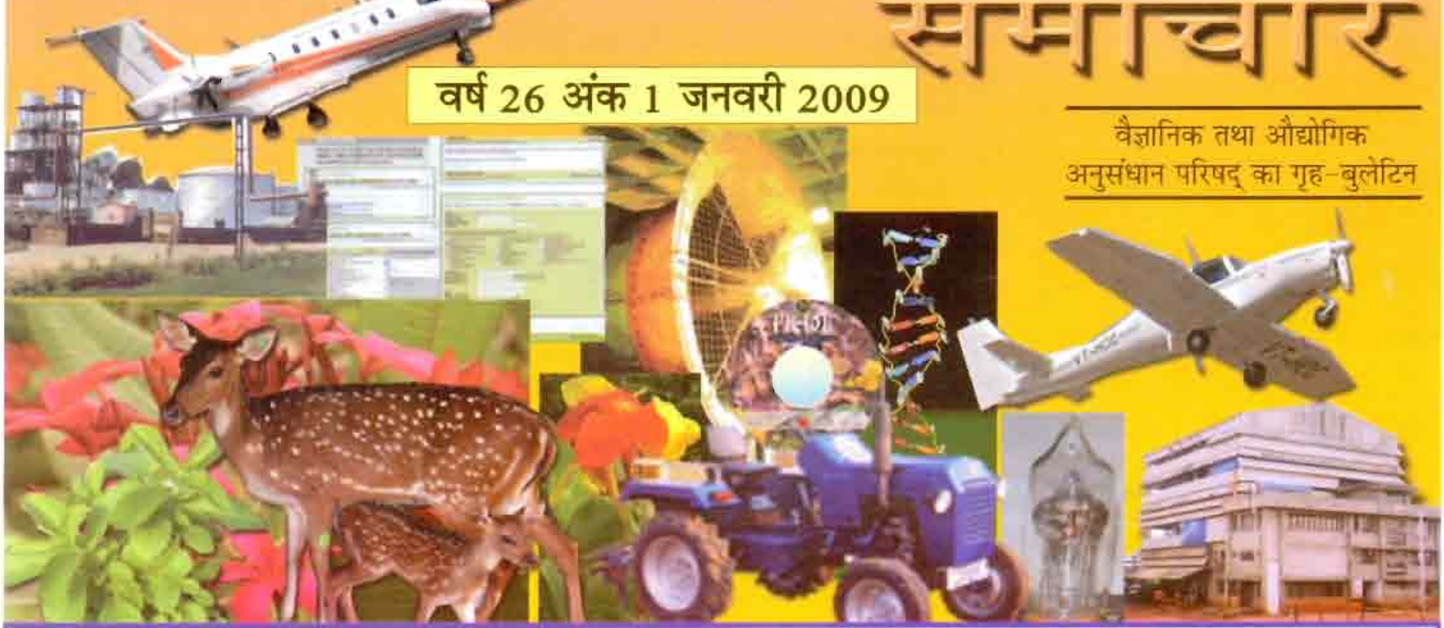

श्री कपिल सिब्बल, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं भूविज्ञान मंत्री द्वारा ओपन सोर्स ड्रग डिस्कवरी का शुभारम्भ

माननीय श्री कपिल सिब्बल, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं भूविज्ञान मंत्री ने 15 सितम्बर 2008 को सीएसआईआर द्वारा संचालित नवाचारी **ओपन सोर्स ड्रग डिस्कवरी (ओएसडीडी)** का अधिकारिक रूप से शुभारम्भ किया। ओएसडीडी का शुभारम्भ उन संक्रामक महामारियों से लड़ने के लिए किया गया है जो विकासशील विश्व को प्रभावित कर रही हैं। यह सीएसआईआर द्वारा वैश्विक भागीदारी में संचालित कन्सोर्टियम है। इसका उद्देश्य सभी को, विशेषकर वैश्विक जनसंख्या के कमजोर क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करना है। इसके लिए सॉफ्टवेयर के ओपन सोर्स मूवमैन्ट तथा ह्यूमन जीनोम सीक्वैसिंग प्रोजेक्ट की सफलता से प्रेरणा ली गयी। अतः ओएसडीडी, वास्तव में एक नवीन तथा पथप्रदर्शक (पाथ ब्रेकिंग) पहल है।

पारम्परिक पेटेण्ट चालित मॉडल, जो विभिन्न क्षेत्रों में मूल्यवान हैं, विकासशील विश्व को प्रभावित करने वाले रोगों के लिए औषधियों का अनुसंधान तथा विकास करने में असफल हो चुके हैं। दूसरी ओर ओपन सोर्स मॉडल संक्रामक रोगों के लिए औषधि खोज का एक व्यवहार्य वैकल्पिक मॉडल प्रस्तुत करता है। यह अनुसंधानकर्ताओं के मध्य मुक्त सुलभता तथा सहयोग की अनुमति प्रदान कर अनुसंधान के लिए संसाधनों का विस्तार करता है। सीएसआईआर ने इसके लिए एक वेब पोर्टल http://www.osdd.net की स्थापना की है। यह पोर्टल सहयोगात्मक अनुसंधान, पैथोजन (रोगाणु) के बारे में डेटा, डेटा विश्लेषण के लिए टूल्स तथा सदस्यों को अपने विचारों के आदान-प्रदान के लिए चर्चा मंच तथा औषधि/खोज में विद्यार्थियों की भागीदारी के लिए परियोजनाओं इत्यादि हेतु एक मंच प्रदान करता है। सीएसआईआर ने सभी ज्वलन्त मस्तिष्कों, चाहे वे विद्यार्थी अनुसंधानकर्ता वैज्ञानिक, शिक्षाविद्, चिकित्सक, सॉफ्टवेयर व्यावसायी, पारम्परिक उपचारकर्ता अथवा उद्योग विशेषज्ञ हैं, को ओएसडीडी वेबसाइट में पंजीकरण कर संक्रामक रोगों के विरुद्ध लड़ाई में अपने विचारों को बांटने के लिए एक उद्घोषक ललकार दी है। विद्यार्थियों तथा अनुसंधानकर्ताओं को प्रतिभागिता के लिए प्रोत्साहित करने हेतु औषधि खोज प्रक्रिया में आने वाली समस्याओं को **चुनौतियों** के रूप में ओएसडीडी वेबसाइट पर पोस्ट किया जाएगा। प्रत्येक समस्या के लिए इससे सम्बन्धित क्रेडिट बिन्दुओं का पूर्व निर्धारित समूह भी होगा। पीयर रिव्यूअर की समिति द्वारा निर्धारित सर्वश्रेष्ठ समाधान को उचित पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। ओएसडीडी सहयोग, साझीदारी तथा खोज के तीन प्रमुख सिद्धान्तों पर आधारित है। इसका लक्ष्य औषधि खोज प्रक्रिया में औषधि की लागत कम करने के उद्देश्य के साथ-साथ सहयोगात्मक तथा उन्मुक्तता की भावना लाना है। सम्भावित औषधियों को उनकी खोज होने के साथ ही जनसुलभ बनाना है। यह भेषजीय कम्पनियों को बाजार में दवाईयां लाने के साथ ही उनकी कीमत तुलनात्मक रखने के योग्य बनायेगा।

विद्यार्थियों तथा अनुसंधानकर्ताओं को प्रतिभागिता के लिए प्रोत्साहित करने हेतु औषधि खोज प्रक्रिया में आने वाली समस्याओं को **चुनौतियों** के रूप में ओएसडीडी वेबसाइट पर पोस्ट किया जाएगा। प्रत्येक समस्या के लिए इससे सम्बन्धित क्रेडिट बिन्दुओं का पूर्व निर्धारित समूह भी होगा। पीयर रिव्यूअर की समिति द्वारा निर्धारित सर्वश्रेष्ठ समाधान को उचित पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

ओएसडीडी सहयोग, साझीदारी तथा खोज के तीन प्रमुख सिद्धान्तों पर आधारित है। इसका लक्ष्य औषधि खोज प्रक्रिया में औषधि की लागत कम करने के उद्देश्य के साथ-साथ सहयोगात्मक तथा उन्मुक्तता की भावना लाना है। सम्भावित औषधियों को उनकी खोज होने के साथ ही जनसुलभ बनाना है। यह भेषजीय कम्पनियों को बाजार में दवाईयां लाने के साथ ही उनकी कीमत तुलनात्मक रखने के योग्य बनायेगा।

प्रथम चरण में, ट्यूबरकुलोसिस (टीबी) बेसिलस (**माइकोबैक्टीरियम ट्यूलरकुलोसिस**) पर कार्य किया जाएगा। तपेदिक जीवाणु संक्रमण से होने वाली मृत्यु का एक बड़ा कारण है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार वर्तमान में विश्व की एक तिहाई आबादी टीवी से संक्रमित है। भारत में टीबी के प्रतिवर्ष 1.8 मिलियन नये मामले हैं। प्रतिवर्ष टीबी के कारण अनुमानतः 370,000 मृत्यु होती हैं। इसका अर्थ है प्रतिदिन 1000 मृत्यु अथवा प्रत्येक तीन मिनट में टीबी से दो मृत्यु। वर्तमान टीबी की चिकित्सा वर्ष 1960 में विकसित की गयी थी और लगभग आधी शताब्दी बीत जाने के बाद भी उपचार में कोई नवीनता नहीं उभरी है। ग्यारहवीं योजना में, सीएसआईआर ने ओएसडीडी परियोजना के लिए रु. 150 करोड़ निर्धारित किये हैं। इतनी ही और राशि अन्तरराष्ट्रीय एजेन्सियों तथा परोपकारी व्यक्तियों से प्राप्त होने की आशा है।

सीएसआईआर द्वारा इस परियोजना के लिए लगभग 40 करोड़ रुपये पहले ही जारी किये जा चुके हैं। ग्लोबल रिसर्च एलाइन्स (जीआरए) जिसमें विश्वभर की सरकारी तथा अलाभकारी अनुसंधान संगठन सम्मिलित हैं, भी ओएसडीडी को समर्थन दे रही हैं।

औषधि खोज पर अब तक के सर्वाधिक बड़े सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजनाओं में हैं-

प्रमुख समन्वयक तथा सलाहकार

प्रो. समीर के. ब्रह्मचारी, सचिव, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान विभाग, भारत सरकार तथा महानिदेशक, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद।

परियोजना निदेशक ओएसडीडी

डॉ. जाकिर थॉमस, प्रमुख, महानिदेशक, तकनीकी प्रकोष्ठ, सीएसआईआर।

परियोजना अन्वेषक तथा विद्यार्थी

भारत की सीएसआईआर प्रयोगशालाएं

- जीनोमिकी और समवेत जीवविज्ञान संस्थान (आईजीआईबी), दिल्ली
- सूक्ष्मजीव प्रौद्योगिकी संस्थान (इमटैक), चण्डीगढ़
- राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एनसीएल), पुणे
- केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सीडीआरआई), लखनऊ तथा अन्य (सम्पर्क: info@osdd.net प्रतिभागिता के लिये)

विश्वविद्यालय तथा शैक्षिक संस्थान

- जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय (जेएनयू), नई दिल्ली
- सीडीएफडी, हैदराबाद तथा अन्य (सम्पर्क: info@osdd.net प्रतिभागिता के लिये)

उद्योग

- सन माइक्रोसिस्टम्स
- टीसीजी लाइफ साइंसेज
- लीड इन्वेन्ट
- जलाजा टैक्नोलॉजिज तथा अन्य (सम्पर्क: info@osdd.net प्रतिभागिता के लिये)

कृपया http://www.osdd.net देखें

अन्य विस्तृत जानकारी के लिए तथा ओएसडीडी आन्दोलन में भाग लेने के लिए - info@osdd.net

निस्केयर में ओपन एक्सेस डे समारोह

प्रो. समीर के. ब्रह्मचारी, महानिदेशक, सीएसआईआर ने आईजेसीए तथा आईजेबीबी का ओपन एक्सेस माध्यम में शुभारम्भ किया

प्रो. समीर ब्रह्मचारी, महानिदेशक, सीएसआईआर आईजेसीए तथा आईजेबीबी को ओपन एक्सेस माध्यम में शुभारम्भ करते हुए

राष्ट्रीय विज्ञान संचार सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), नई दिल्ली ने प्रचलित प्रवृतियों के अनुसार अपनी दो अनुसंधान पत्रिकाओं की ओपन एक्सेस के द्वारा 14 अक्टूबर 2008 को प्रथम अन्तरराष्ट्रीय ओपन एक्सेस डे मनाया। इस अवसर पर प्रो. समीर के. ब्रह्मचारी, महानिदेशक, सीएसआईआर ने निस्केयर की दो अनुसंधान पत्रिकाओं यथा इंडियन जर्नल ऑफ कैमिस्ट्री-सैक्शन ए तथा इंडियन जर्नल ऑफ बायोकैमिस्ट्री एण्ड बायोफिजिक्स का ओपन एक्सेस माध्यम में शुभारम्भ किया। संग्रहण को निस्केयर ऑनलाइन पीरियोडिकल्स रिपोजिटरी (एनओपीआर) के नाम से जाना जाएगा।

(http://nopr.niscair.res.in)

वर्तमान में संग्रहण में लगभग 2000 अनुसंधान लेख हैं, जिसमें से उपरोक्त दो अनुसंधान पत्रिकाओं के लगभग 400 अनुसंधान लेख ओपन एक्सेस माध्यम में उपलब्ध हैं। ओपन एक्सेस माध्यम में अन्य अनुसंधान पत्रिकाओं को भी लाने का कार्य शीघ्र ही आरम्भ किया जाएगा ताकि विश्वभर के अनुसंधानकर्ताओं को लाभ हो सके।

एनओपीआर डिजीटल रिपोजिटरी सॉफ्टवेयर डी स्पेस पर आधारित है तथा हमारी आवश्यकताओं के अनुरूप इसे कस्टमाइज किया गया है। एसओपीआर क्रियान्वयन में तत्काल ही वर्तमान वर्ष के प्रपत्रों को अपलोड करके धीरे-धीरे पिछले वर्षों के प्रपत्रों को भी जोड़ने की योजना है। अधिक जानकारी के लिए डॉ. विक्रम. वी.अगाड़ि से vva@niscair.res.in पर सम्पर्क किया जा सकता है।

प्रो. यू. आर. राव, ए.वी. रामाराव प्रौद्योगिकी पुरस्कार से सम्मानित

भारतीय रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईसीटी), हैदराबाद ने प्रो. यू.आर. राव, पूर्व अध्यक्ष, अन्तरिक्ष आयोग तथा पूर्व सचिव, अन्तरिक्ष विभाग, भारत सरकार के द्वारा व्याख्यान का आयोजन कर इस वर्ष का राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया। प्रो. राव ने भारत रोमांचक अन्तरिक्ष क्षेत्र पर अपना व्याख्यान दिया।

एमआईटी, यूएसए के पूर्व संकाय सदस्य तथा स्वर्गीय प्रो. विक्रम साराभाई के शिष्य प्रो. राव ने भारत में अन्तरिक्ष अनुसंधान तथा चन्द्रयान, भारत के महत्वाकांक्षी चन्द्र मिशन के विषय में बात की तथा कहा कि भारत आने वाले छह,सात वर्षों में आशाजनक रूप से चांद पर मानव मिशन भेज पायेगा। उन्होंने आगे व्याख्या की कि वर्तमान अन्तरिक्ष प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर भारत हरित क्रान्ति प्राप्त करने के साथ-साथ वातावरण, पर्यावरण तथा जैवविविधता को भी मॉनीटर कर पायेगा।

अन्तरिक्ष प्रौद्योगिकी देश की ऊर्जा सुरक्षा तथा जल प्रबन्धन के लिए सुचालनीय होंगी तथा खनिज और अन्य प्राकृतिक संसाधनों के लिए भूमि तथा समुद्र को प्रमाणिक सर्वेक्षण करने के अतिरिक्त फसलों को भी मॉनीटर कर सकती है। प्रो. राव ने कहा कि पर्यावरण तथा बदलती जैव विविधता को मॉनीटर करने के लिए भूप्रेक्षण समय की मांग है।

इससे पहले डॉ. जे.एस. यादव, निदेशक, आईआईसीटी ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आईआईसीटी प्रतिवर्ष इस दिन किसी न किसी प्रख्यात वैज्ञानिक/प्रौद्योगिकीविद् को व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित करती है।

डॉ. ए.सी. कंवर, निदेशक ग्रेड के वैज्ञानिक ने उपस्थित जनसमूह को वक्ता का परिचय दिया। व्याख्यान के पश्चात प्रो. राव को ए.वी. रामाराव प्रौद्योगिकी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। इस पुरस्कार में एक लाख रूपये का नकद पुरस्कार तथा एक प्रशस्ति पत्र दिया जाता है।

इस पुरस्कार की स्थापना डॉ. ए.वी. रामाराव, पूर्व निदेशक, आईआईसीटी के सम्मान में की गयी थी तथा इसे राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए समर्पित प्रसिद्ध वैज्ञानिकों तथा प्रौद्योगिकीविदों को उनके योगदान के लिए दिया जाता है।

चीनी शिष्टमंडल का सीएसआईओ दौरा

एक चीनी शिष्टमंडल ने वैज्ञानिक उपकरण विन्यास और वैज्ञानिक उपस्करों के प्रबंधन की सामान्य जानकारी प्राप्त करने तथा संस्थानों के बीच उपकरण विन्यास सुविधाओं की साझेदारी का जायजा लेने के लिए 15 सितम्बर, 2008 को संगठन का दौरा किया।

इस शिष्टमंडल में भारत में चीनी दूतावास के डॉ. वांग किमिंग, कांउसलर; श्री काउ जियांरू, प्रथम सचिव, विज्ञान कार्यालय और श्री किन हॉन्गमिंग, द्वितीय सचिव, विज्ञान कार्यालय शामिल थे।

संगठन के विभिन्न यूनिट प्रभारियों ने इस शिष्टमंडल के साथ विस्तार से चर्चा की। इससे पूर्व श्री ए.के. डिमरी, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने इस दल का सीएसआईओ में स्वागत करते हुए उन्हें संगठन के विभिन्न अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों की जानकारी दी।

पारस्परिक विचार-विमर्श के दौरान चीन के अनुसंधान संस्थानों के साथ आपसी सहयोग की सम्भावनाओं की समीक्षा की गई।

निष्कर्षस्वरूप यह सामने आया कि एक समान जलवायु और सांस्कृतिक परिस्थितियों एवं पड़ोसी देश होने के मद्देनज़र चीन के अनुसंधान एवं विकास संस्थानों और विश्वविद्यालयों तथा सीएसआईओ के बीच उपकरण विन्यास के क्षेत्र में सहयोगात्मक अनुसंधान की व्यापक सम्भावनाएं हैं।

इस शिष्टमंडल ने संगठन की कुछ प्रयोगशालाओं और इण्डो-स्विस प्रशिक्षण केन्द्र (आईएसटीसी) का भी दौरा किया, जहां वैज्ञानिकों और तकनीशियनों ने उन्हें अपने-अपने क्षेत्रों की गहन जानकारी दी।

सीएसआईओ के पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

केन्द्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन, चण्डीगढ़ ने 30 अक्टूबर, 2008 को अपने 49वें स्थापना दिवस के अवसर पर संयुक्त अनुसंधान कार्य एवं मानव संसाधन विकास को बढ़ावा देने के लिए पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए।

इसके अन्तर्गत स्वास्थ्य मॉनिटरिंग, भूकम्पीय एवं आपदा प्रबन्धन उपकरण विन्यास, चिकित्सा उपकरण विन्यास, सैंसर/टांसड्यूसर्ज़, आभासी उपकरण विन्यास, सॉफ्ट कम्प्यूटिंग तकनीकों, भौतिकी आधारित उपकरण विन्यास, पदार्थ विज्ञान, रसायन विज्ञान आदि के क्षेत्रों में पारस्परिक सहयोग किया जाएगा।

समझौता ज्ञापन पर संगठन की ओर से डॉ. पवन कपूर, निदेशक, सीएसआईओ तथा पंजाब विश्वविद्यालय की ओर से डॉ. आर.सी. सोबती, कुलपति, पंजाब विश्वविद्यालय ने हस्ताक्षर किए।

पंजाब विश्वविद्यालय के एमएससी., एम.टैक. और बी.टैक के विद्यार्थी अपने-अपने विशेषज्ञता के क्षेत्रों में संगठन में परियोजना कार्य कर सकेंगे और दूसरी ओर संगठन के स्टाफ सदस्य अनुसंधान व अनुप्रयोग के नए उभर रहे क्षेत्र में संयुक्त निर्देशन में पीएच.डी. कार्यक्रमों के लिए पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में अपना पंजीकरण करवा सकेंगे।

इस समझौते से विभिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता की जनशक्ति तैयार करने और उसके उपयोग की दिशा में शिक्षा संस्थानों और अनुसंधान एवं विकास संस्थानों के बीच सुदृढ़ सम्पर्क बनाने में सहायता मिलेगी।

इससे विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उच्च प्राथमिकता के क्षेत्रों के कार्यक्रमों में अनुसंधान एवं विकास सुविधाओं के अधिकतम प्रयोग में भी सहयोग हो सकेगा।

सीएसआईओ के आरईआईएल, जयपुर के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

संगठन ने 26 सितम्बर 2008 को सीएसआईआर स्थापना दिवस के अवसर पर राजस्थान सरकार के सार्वजनिक क्षेत्र के एक उपक्रम मैसर्ज़ राजस्थान इलैक्ट्रॉनिक्स एंड इन्स्ट्रूमैंट्स लिमिटेड (आरईआईएल), जयपुर के साथ एक समझौता ज्ञापन जारी किया।

इसका उद्देश्य पब्लिक-पब्लिक साझेदारी में सीएसआईओ द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों की विपणन संभावनाओं का पता लगाना है।

समझौता ज्ञापन के इस नए स्वरूप के तहत आरईआईएल, जयपुर संगठन द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों के लिए बाजार की तलाश हेतु अपनी व्यावसायिक नीतियों का प्रयोग करेगा।।

उपभोक्ताओं की प्रतिक्रियाओं के अनुरूप आरईआईएल संगठन की प्रौद्योगिकियों पर आधारित उत्पादों को न्यूनतम समय में बाजार में लाने के लिए निवेश करेगा। रॉयल्टी/लाभ आदि की सांझेदारी के संबंध में प्रत्येक उत्पाद के लिए उपयुक्त क्रियाविधि दोनों पार्टियों की पारस्परिक सहमति से तैयार की जाएगी।

सीएसआईओ और आरईआईएल के बीच पारस्स्परिक सहयोग की इस नई विधि द्वारा प्रौद्योगिकी विकास और बाजार में उत्पाद के पहुंचने के बीच के अन्तराल को कम करने में सहायता मिलेगी।

सीईसीआरआई द्वारा अनुज्ञापित प्रौद्योगिकी/ प्रायोजित परियोजनायें एवं परामर्शक लिये गये/तकनीकी

केन्द्रीय विद्युतरसायन अनुसंधान संस्थान (सीईसीआरआई) कारैकुड़ी द्वारा मई-जून 2008 के दौरान ली गई अनुज्ञापित प्रौद्योगिकी, प्रायोजित परियोजनाएं, परामर्शक और तकनीकी समनुदेशन इस प्रकार हैं

अनुज्ञापित प्रौद्योगिकी

• मैसर्स पीपीएम टैक्नोलॉजी, चैन्ने द्वारा इन सिटु इलेक्ट्रोसिन्थेसिस ऑफ सोडियम हाइपोक्लोराईट फॉर डिस्इन्फैक्शन एण्ड वॉटर ट्रीटमेंट ऍप्लीकेशन्स।

एक मुश्त प्रीमियम - रु. 56,180/- +निदर्शन शुल्क रु. 28,090/-

लाइसेंस की प्रकृति - साधारण

लाइसेंस की अवधि - 7 वर्ष

प्रायोजित परियोजनायें

• मैसर्स ओएनजीसी लि., पनवेल द्वारा स्टडीज ऑन दी इलैक्ट्रोलिसिस ऑफ क्यूप्रस क्लोराईड एण्ड रिकवरी ऑफ कॉपर।

• मैसर्स इंटरनेशनल पेन्ट, बंगालुरु द्वारा स्टडीज ऑन कोटिंग परफॉरमेन्स इन सल्फर डाईऑक्साईड एन्वायरॉनमेंट्स।

• विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली द्वारा डेवलपमेंट ऑफ कंडक्टिंग पॉलीमर रिचार्जियेबल बैटरी फॉर कन्ज्यूमर एप्लीकेशन्स।

• मैसर्स चीमापॉल इंडस्ट्रीज, मुम्बई द्वारा फिजीबिलिटी स्टडीज ऑन दी प्रिपरेशन ऑफ रिबिटिल 3,4 - जायलिडीन फ्रॉम डी-राइबोस।

परामर्शक सेवाएं

• मैसर्स कोरोशन कंट्रोल इंजीनियर्स, कारैकुड़ी द्वारा वेटिंग ऑफ कैथोडिक प्रोटेक्शन डिजाईन फॉर दी बीपीसीएल पाईपलाईन।

• मैसर्स स्मार्ट क्रियेशन्स, चैन्ने द्वारा टेस्टिंग ऑफ गोल्ड कनटेंट इन गोल्ड इलेक्ट्रोप्लेटिंग डन बाई स्मार्ट क्रियेशन्स चैन्ने ऑन कॉपर आइटम्स।

तकनीकी सेवाएं

• मैसर्स किरलोस्कर बैटरीज प्रा.लि., बंगालुरु द्वारा किरलोस्कर वीआरएलए बैटरियों का मूल्यांकन जेआईएस-8702-। विनिर्देश के आधार पर निम्न बैटरियों में:

(1) 12V/45Ah

(2) 12V/65Ah

(3) 12V/75Ah

• मैसर्स सिपी पॉलीयूरेथेन प्रा.लि., पुणे द्वारा टेस्टिंग ऑफ लिक्विड पेंट सेम्पल्स।

• एनएलसी लि., नेवेली द्वारा टेस्टिंग ऑफ ब्लैन्डेड ऑरगेनोफॉस्फोनेट सेम्पल्स।

आईआईसीटी की आर एण्ड डी परियोजनाएं एवं पेटेंट

भारतीय रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईसीटी), हैदराबाद ने सितम्बर 2008 के दौरान परियोजना समाप्ति रिपोर्ट प्रस्तुत की:

• टीएमओपी एण्ड एम, नई दिल्ली में डेवलपमेंट ऑफ ए पायलेट प्लांट स्केल प्रोसेस फॉर बायोडीजल फ्रॉम हाई एफएफए वेजिटेबल ऑयल्स एण्ड एसिड ऑयल्स।

• मैसर्स कैडिला फॉरमास्युटिकल्स लिमिटेड, अहमदाबाद द्वारा रिकवरी ऑफ निकल एज प्योर निकल कारबोनेट फ्राम स्पेंट रैने निकल केटालिस्ट ऑफ हायड्रोजिनेशन रिएक्शन।

परामर्शक परियोजनाएं

• मैसर्स कैडिला फॉरमास्युटिकल्स लिमिटेड, अहमदाबाद (संविदा मूल्य रु. 3.37 लाख) के लिए कन्डक्टिंग एक्सआरपीडी स्टडीज ऑफ सेम्पल्स (VIII परियोजना)

• मैसर्स बायोप्लस लाईफ साइन्सेस प्रा.लि., बंगालुरु से विशिष्ट आर एण्ड डी गतिविधि के लिए आर एण्ड डी परामर्शक सेवायें प्रदान करना।

• मैसर्स वाटसन फार्मा प्रा.लि., मुम्बई (संविदा मूल्य रु. 2.24 लाख) के लिए कन्डक्टिंग एक्सआरडी पॉलीमॉफ स्टडीज ऑफ सेम्पल्स-V प्रोजेक्ट।

प्रायोजित परियोजनाएं

• टाटा स्टील लि., मुम्बई (रु. 2500 लाख) द्वारा प्रायोजित डवलपमेंट ऑफ लाईट वेट फ्लैक्सिबल पीवी फोम एज ए लेमिनेटेड और सैंडविच टु बी यूज्ड फॉर कन्सट्रक्शन एण्ड ओटो एप्लीकेशन्स।

• एकोरिस रिसर्च लि., पुणे (रु. 2.24 लाख) द्वारा प्रायोजित कन्डक्टिंग एक्सप्लोरेटरी स्टडीज ऑन माइक्रोबियल ट्रांसफॉरमेशन ऑफ फ्लोरोबैंजीन टु फ्लोरोकेटकॉल ऑन लैब स्केल (फेज-I- स्ट्डीज)

• एकोरिस रिसर्च लि., पुणे (रु. 4.49 लाख) द्वारा प्रायोजित कन्डक्टिंग एक्सप्लोरेटरी स्टडीज ऑन काइनेटिक एंजाइमेटिक रिजोल्युशन ऑफ ए नाइट्राईल ऑन लैब स्केल।

फाईल किए गये पेटेंट (भारत में)

प्रभावती देवी, बीएलए; गंगाधर, के.एन.; विजय लक्ष्मी, के. रामाकृष्णा, एस. मधुसूदन, के. दिवान, पी.वी. प्रसाद, आर.बी.एन द्वारा सिन्थेसिस ऑफ हैक्साडेसिल सिस-9-टेट्रा डेसीकोएट एण्ड हैक्साडेसिल सिस-10-टेट्रासिनोएट एण्ड दिअर इवेल्युएशन फॉर एंटी आर्थ्राईटिस प्रॉपर्टीज इन रैट्स, PT- 541/2008।

डॉ. विक्रम कुमार, निदेशक, एनपीएल को निस्केयर के निदेशक के रूप में अतिरिक्त प्रभार दिया गया

डॉ. विक्रम कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला (एनपीएल), नई दिल्ली को श्री एस.के. रस्तोगी, कार्यकारी निदेशक, निस्केयर की सेवानिवृति के पश्चात दिनांक 01 दिसम्बर 2008 से निदेशक, राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान के पद का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया है।

डॉ. आर.के. चड्डा को एपीएएस का फैलो चुना गया

डॉ. आर.के. चड्डा, वैज्ञानिक एफ, राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान (एनजीआरआई), हैदराबाद को आन्ध्रा प्रदेश एकेडमी ऑफ सांइसेज का फैलो चुना गया है।

इससे पहले उन्हें वर्ष 2007 में इंडियन जियोफिजिकल यूनियन का फैलो भी चुना गया तथा वर्ष 2003 में भूभौतिकी के लिए नेशनल मिनरल अवार्ड भी प्रदान किया गया।

वर्तमान में वे एशियन सिस्मोलॉजिकल कमीशन के महासचिव तथा इन्टरनेशनल नेचुरल हेजार्ड सोसायटी के अध्यक्ष भी हैं।

डॉ. चड्डा एनजीआरआई के सिस्मोलॉजी समूह के प्रमुख हैं तथा उन्होंने देश में भूकम्प के क्षेत्र तथा सुनामी के अनुसंधान में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके 49 अनुसंधान प्रपत्र रैफरीड अन्तरराष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय अनुसंधान पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं, उन्होंने तीन अन्तरराष्ट्रीय अनुसंधान पत्रिकाओं में सामयिक मानचित्र मुद्दों को संपादित तथा इंडियन जियोफिजिकल यूनियन के भारतीय विशेष संस्करण को संपादित किया है।

वे 35 तकनीकी प्रपत्रों के सहलेखक हैं तथा उन्हें भारत के कोयना क्षेत्र में मध्यम दर्जे के भूकम्पों की लघु अवधि भविष्यवाणी करने के उनके कार्य के लिए यूएस पेटेण्ट भी दिया गया है।

महानिदेशक, सीएसआईआर ने सीकरी का दौरा किया

प्रोफेसर समीर के. ब्रह्मचारी, महानिदेशक, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने केन्द्रीय विद्युतरसायन अनुसंधान संस्थान (सीईसीआरआई) की हीरक जयन्ती के उपलक्ष्य में विशेष व्याख्यान देने हेतु सीईसीआरआई, कारैकुड़ी का दौरा किया और साथ ही उन्होंने सीएसआईआर के वार्षिक व्यावसायिक सम्मेलन (एबीएम-2008) का उद्घाटन भी किया।

अपने व्याख्यान में प्रोफेसर ब्रह्मचारी ने सीएसआईआर की प्रयोगशालाओं की शानदार उपलब्धियों की चर्चा की। उन्होंने राष्ट्र निर्माण में सीएसआईआर की प्रयोगशालाओं के योगदान का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि कृषि, स्वास्थ्य, पेयजल मिशन, अन्तरिक्ष तथा ऊर्जा आदि कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें सीएसआईआर की प्रयोगशालाओं का उल्लेखनीय योगदान हैं।

अपने व्याख्यान में उन्होंने कहा कि मतदान के दौरान प्रयोग में लाई जाने वाली स्याही जो कि सीएसआईआर द्वारा 1960 में विकसित की गई थी, से आज भी सीएसआईआर को काफी रॉयल्टी प्राप्त हो रही है। इसी प्रकार 1970 में भारत में हरित क्रान्ति के दौरान भारत में प्रयोग में लाए गए 70 प्रतिशत से अधिक पीड़कनाशी सीएसआईआर द्वारा विकसित पद्धति पर आधारित थे। कोयले को साफ करने की तकनीक, देशीय स्वराज ट्रेक्टर तथा क्लोर-एल्केली क्षार उत्पादन हेतु टीएसआईए विद्युदग्र आदि सीएसआईआर प्रयोगशालाओं द्वारा किए गए कुछ अन्य ऐसे आविष्कार हैं जिनका देश की आर्थिक उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान है। हाल ही

सीकरी के कार्मिकों को सम्बोधित करते हुए महानिदेशक, सीएसआईआर

में सीएसआईआर ने सफलतापूर्वक एक छोटे विमान का निर्माण भी किया है।

उन्होंने गर्व से कहा कि 2007 में सीएसआईआर के वैज्ञानिकों ने नोबेल पुरस्कार प्राप्त कार्य की उल्लेखनीय सूची में अपना स्थान बनाया है। उन्होंने यह भी कहा कि सीएसआईआर, सशक्त प्रशिक्षित वैज्ञानिक एवं तकनीकी मानवशक्ति का एक समूह है तथा यह हज़ारों डॉक्टोरल एवं पोस्ट - डॉक्टोरल अनुसंधानकर्ताओं एवं परियोजना कर्मियों को प्रशिक्षित कर देश के मानव संसाधन में उल्लेखनीय योगदान दे रहा है।

तदोपरान्त उन्होंने देश के विभिन्न भागों में रहने वाले विभिन्न लोगों के जीन मैपिंग तथा अस्थमा और डाइबिटिज मेलिटस् जैसी विशिष्ट बीमारियों पर आईजीआईबी कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। दवाइयों की प्रभावोत्पादकता के मूल्यांकन की दृष्टि से इस अध्ययन को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर काफी महत्वपूर्ण माना गया है। उन्होंने यह भी बताया कि जब देश महाराष्ट्र एवं गुजरात में भूकम्प तथा तमिलनाडु के तटवर्ती क्षेत्रों में सुनामी जैसी आपदा से गुजर रहा था तब सीएसआईआर और इसके कर्मचारियों ने राष्ट्र हित में तुरन्त अपनी सेवाएं प्रदान की। प्रोफेसर ब्रह्मचारी ने एस एंड टी प्रबन्धन के मॉडल, विशेष रूप से हमारे देश के लिए उपयोगी मॉडल पर संक्षिप्त चर्चा की। इस सम्बन्ध में उन्होंने पिछले एक दशक में आईजीआईबी के क्रमिक विकास के आधार पर बनाए गए सफल मॉडल पर भी विस्तृत चर्चा की। उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकी विकास एवं प्रबन्धन हेतु विभिन्न - अभिनव अनुसंधान एवं विकास उपकरणों को अपनाते हुए आईजीआईबी जीव रसायन अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य कर रही एक पृथक प्रयोगशाला के स्थान पर आज समसामयिक जीनोमिक्स अनुसंधान को समर्पित एक विशिष्ट प्रयोगशाला बन चुकी है।

सीकरी में महानिदेशक के दौरे की झलकियां

उन्होंने इस विषय पर भी ध्यान दिलाया कि प्रतिदिन बदलते वैश्विक परिदृश्य में सीएसआईआर को अपने ज्ञान को अद्यतन करते रहना होगा और उसे आज की समस्याओं तथा भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए भी सतत तैयार रहना होगा। उन्होंने वैज्ञानिकों, विशेष रूप से युवा वैज्ञानिकों से बड़े स्वप्न देखने एवं उन्हें साकार करने हेतु कड़ी मेहनत करने का आह्वान किया और कहा कि इसी से सीएसआईआर को राष्ट्रीय स्तर पर एक अपेक्षित स्थान प्राप्त होगा और भारत एक अजेय महाशक्ति बनेगा। उन्होंने यह आशा भी प्रकट की कि वर्तमान में सीएसआईआर का अर्थ निगमित-सामाजिक-भारतीय दायित्वपूर्ण वैज्ञानिक तथा अभिनव अनुसंधान होना चाहिए।

अन्त में प्रोफेसर ब्रह्मचारी ने पूरे उत्साह एवं निष्ठा से पंडित जवाहरलाल नेहरू के कुछ शब्दों को दोहराते हुए कहा कि भारत जैसे देश की गरीबी सम्बन्धी समस्याएं केवल विज्ञान के द्वारा ही हल की जा सकती है। उन्होंने इस विषय पर ज़ोर दिया कि आज के दौर में सफलता प्राप्त करने के लिए सभी सीएसआईआर प्रयोगशालाओं में प्रतिस्पर्धात्मक मनोभावना के साथ आपसी समन्वय का होना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त उन्होंने इस विषय पर भी जोर दिया कि समन्वय के साथ प्रतिस्पर्धा ही भविष्य में सीएसआईआर का आदर्श वाक्य होना चाहिए।

उन्होंने सीएसआईआर की भविष्य की कार्य योजना के बारे में बताते हुए कहा कि हमारा परम लक्ष्य यह है कि विज्ञान का विकास इस प्रकार हो कि आम लोगों को किफायती स्वास्थ्य सुविधाएं, शुद्ध पेयजल और अपशिष्ट से आमदनी तथा संपोषित ऊर्जा आदि उपलब्ध हो सके। प्रोफेसर ब्रह्मचारी के इस व्याख्यान के दौरान भारी संख्या में सीईसीआरआई, सीएसआईआर मुख्यालय तथा सीएसआईआर की अन्य 35 प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिक उपस्थित थे। इनमें विशेष रूप से डॉ. एस. शिवराम, निदेशक, एनसीएल, डॉ. बी.के. मिश्रा, निदेशक, आईएमएमटी, डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, एनईआईएसटी, श्री एस. घोष, सीएमडी, एनआरडीसी, डॉ. डी. योगेश्वर राव, सीएसआईआर मुख्यालय एवं अन्य गणमान्य अतिथि भी उपस्थित थे। इससे पूर्व, प्रोफेसर ए.के. शुक्ला, निदेशक, सीईसीआरआई ने अपने स्वागत भाषण में सीईसीआरआई की हीरक जयन्ती तक की सफल यात्रा का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। व्याख्यान के उपरान्त डॉ. वी. यज्ञरामन, वैज्ञानिक, सीईसीआरआई ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

इस कार्यक्रम के उपरान्त प्रोफेसर ब्रह्मचारी ने सीकरी में आयोजित सीएसआईआर के वार्षिक व्यवसायिक सम्मेलन (एबीएम-2008) का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने राष्ट्र के औद्योगिक एवं आर्थिक विकास में सीएसआईआर की महत्वपूर्ण भूमिका का संक्षिप्त वर्णन भी दिया। उन्होंने कहा कि सीएसआईआर का व्यवसायिक विकास, वैश्विक विकास के समतुल्य होना चाहिए। उन्होंने डॉ. एस. शिवराम, निदेशक, एनसीएल से सीएसआईआर की व्यवसायिक नीति के आधुनिकीकरण एवं विकास सम्बन्धी कार्यक्रम के परामर्शदाता बनने का अनुरोध किया।

अपराह्न में प्रोफेसर ब्रह्मचारी ने सीईसीआरआई में स्थापित ई-लाइब्रेरी का उद्घाटन किया। वैज्ञानिक एवं तकनीकी कर्मचारियों को सम्बोधित करने के उपरान्त उन्होंने ईंधन सेल प्रयोगशालाओं का दौरा किया और हाल ही में स्थापित केन्द्रीय उपकरण सुविधा का निरीक्षण भी किया। बैटरी प्रभाग में कार्यरत वैज्ञानिकों के साथ अपनी संक्षिप्त चर्चा के दौरान उन्होंने सीएसआईआर के **सोलेक्शा** (बैटरी से चलने वाली साइकिल रिक्शा) के विकास सम्बन्धी कार्यक्रम का विवरण भी प्रस्तुत किया और सीईसीआरआई के वैज्ञानिकों से सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण इस अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रम में अपना समुचित योगदान देने के लिए भी कहा।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान में 22वीं आन्तरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून के राजभाषा अनुभाग द्वारा समय-समय पर हिन्दी कार्यलाओं/राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन, देश के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानों के व्याख्यान, स्तरीय हिन्दी पत्रिका विकल्प के अनेकानेक महत्वपूर्ण विशेषांकों के प्रकाशन के अतिरिक्त हिन्दी माह में निबन्ध, अनुवाद एवं शब्दावली, टिप्पण एवं आलेख, हस्ताक्षर, आशु-भाषण, कविता एवं सुलेख आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन कर अनवरत चल रही त्रैमासिक संगोष्ठी के क्रम में 22वीं आन्तरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन गत दिवस डॉ. एम.जी. कृष्ण संगोष्ठी-कक्ष में किया गया।

संस्थान के निदेशक डॉ. मधुकर ओंकारनाथ गर्ग ने संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए जहां राजभाषा अनुभाग के प्रयासों की सराहना की, वही इस बात को भी रेखांकित किया कि किसी कार्य को प्रारम्भ करना सरल है, लेकिन उसको बराबर बनाए रखना एक चुनौती है। इसको राजभाषा अनुभाग बखूबी निभा रहा है। संगोष्ठी में वैज्ञानिकों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि भाषा संचार के लिए है अतः हमें प्रयास करना चाहिए कि हम अपनी बात प्रभावी ढंग से कहें ताकि विषयों की पुनरावृत्ति न हो। संस्थान द्वारा नियमित रूप से हिन्दी में आयोजित की जा रही इस प्रकार की वैज्ञानिक संगोष्ठियां परिषद की अन्य प्रयोगशालाओं के साथ-साथ देश के अन्य वैज्ञानिक संगठनों के लिए अनुकरणीय सिद्ध हो सकती है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए संस्थान के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी एवं संगोष्ठी के संयोजक डॉ. दिनेश चमोला ने कहा कि सूचना-क्रान्ति के इस युग में जहां ज्ञान-विज्ञान का विस्फोट हुआ है वहां शब्दावली व्यवहार से जिन्दा रह सकती है। शब्दावली की सरलता व क्लिष्टता महज परिचय व अपरिचयमात्र है। जटिलतम वैज्ञानिक विषयों को सहज, सरल हिन्दी में अभिव्यक्त करना राष्ट्रीय महत्व का कार्य है। वस्तुतः हिन्दी के माध्यम से जनमानस तक पहुंचकर ही हमारी ज्ञान यात्रा सफल हो सकती है।

संगोष्ठी सत्र में श्रीमती पुष्पा गुप्ता ने **कार्बन प्रग्रहण तथा भंडारण** विषय के अन्तर्गत प्रस्तावना, ब्र$_2$ उत्सर्जन, पृथ्वी पर ग्रीन हाउस गैसों का प्रभाव, कार्बन प्रग्रहण तथा भंडारण, पर्यावरण में सीसीएस का प्रभाव, ब्र$_2$ पर नियंत्रण, ब्र$_2$ ट्रांसपोर्ट, ब्र$_2$ भंडारण एवं रिसाव, सीसीएस व्यय आदि विन्दुओं पर; श्री स्वप्निल दिवेकर ने वैश्विक तापनः कारण, प्रभाव तथा प्रशमन, विषयांतर्गत ग्रीन हाउस प्रभाव तत्संबंधी कारण, मानव जनित कारण, ग्रीन हाउस प्रभाव कारक, भू-गर्भीय भंडारण तथा महासागरीय भंडारण जैसे महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर; सुश्री माफी खातून ने **आयनिक द्रवों द्वारा पेट्रोलियम पदार्थों से सल्फर तथा ऐरोमैटिक हाइड्रोकार्बन का निष्कर्षण** विषय पर आयनिक द्रव, मुख्य आयनिक द्रव धनायन-ऋणायन, आयनिक द्रवों के मुख्य गुण, संश्लेषण विधि, प्रयोगशाला में संश्लेषित आयनिक द्रव, उनका हाइड्रोकार्बन उद्योग में प्रयोग, ऐरोमैटिक निष्कर्षण में प्रयुक्त मुख्य आयनिक द्रव एवं उनके महत्व परः सुश्री मनीषा सहाय ने वैश्विक तापन विषय के अन्तर्गत वैश्विक तापन क्या है? इसके मुख्य कारण, प्रभाव तथा इसको रोकने के कारगर उपाय आदि पर तथा श्री देवेंन्द्र सिंह ने **नव पीढ़ी वाहनों हेतु वायु-नव ईंधन** विषय के अन्तर्गत आलेख की प्रसतावना, वैकल्पिक ईंधनों की आवश्यकता, वायु वाहनों का इतिहास, वायु कार की अवधारणा तथा तत्सम्बन्धी भावी योजनाओं पर प्रभावी प्रस्तुतियां दीं।

अन्त में संस्थान के प्रशासक नियंत्रक श्री ए.के. राज़दान ने इस प्रकार के आयोजनों के लिए जहां शोध-पत्र प्रस्तुतकर्ताओं को सहज शब्दावली में अपने विचार अभिव्यक्त करने की बधाई दी, वहीं इस श्रृंखला को इसी प्रकार बनाए रखने का आह्वान कर सभी उपस्थितों के प्रति कृतज्ञता भी ज्ञापित की। संगोष्ठी की सम्पूर्ण सफलता में विशेष सहयोग श्री प्रताप सिंह चौहान, मुकेश चन्द्र रतूड़ी एवं श्री दीपक कुमार का रहा। प्रत्येक शोधपत्र की प्रस्तुति पर उपस्थित श्रोताओं ने वक्ताओं से अपने प्रश्नों, जिज्ञासाओं एवं शंकाओं का समाधान प्राप्त किया। इसमें संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिकों, तकनीकी कर्मचारियों के साथ-साथ देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों एवं सरकारी प्रतिष्ठानों से आए प्रशिक्षणार्थियों ने भी भाग लिया।

राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), नई दिल्ली में स्थापना दिवस समारोह

प्रो. वी.एन. राजशेखरन पिल्लै, उपकुलपति, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली निस्केयर में सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह के मुख्य अतिथि थे। प्रो. पिल्लै ने अपने सीएसआईआर स्थापना दिवस व्याख्यान का शुभारम्भ निस्केयर के योगदान से

प्रो. वी.एन. राजशेखरन पिल्लै सीएसआईआर स्थापना दिवस व्याख्यान देते हुए

किया, **मैं, एक वैज्ञानिक होने के नाते राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर इस संस्थान के महत्व को जानता हूं। यह संस्थान सीएसआईआर के पहले के दो प्रमुख संस्थानों (निस्कॉम और इन्सडॉक) के विलय का परिणाम है तथा वैज्ञानिक समुदाय को महत्वपूर्ण सेवा प्रदान कर जनसामान्य तक विज्ञान को पहुंचाने के साथ-साथ अनुसंधान को प्रोत्साहित कर रहा है।**

कुछ उदाहरण देते हुए प्रो. पिल्लै ने कहा कि **निस्केयर द्वारा प्रकाशित इंडियन जर्नल ऑफ ट्रेडिशनल नॉलेज एक महत्वपूर्ण अनुसंधान पत्रिका है तथा जब इस देश के पारम्परिक ज्ञान का विस्तृत रूप से प्रचार-प्रसार किया जाएगा तो 10-15 वर्षों में इसका प्रभाव और भी दृष्टिगोचर होगा। वैल्थ ऑफ इंडिया की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि यह एक ऐसा योगदान है जिसे आप और आपके पूर्वज करते आ रहे हैं। यह एक प्रशंसनीय योगदान है।**

यह कहते हुए कि **विज्ञान संचार एक वास्तविक चुनौती है**, प्रो. पिल्लै ने जोर दिया कि **यह बहुत महत्वपूर्ण है कि प्रिन्ट तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तथा आधुनिक सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी सभी स्तरों पर शिक्षा के लिए, विशेषकर विज्ञान के प्रचार प्रसार के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभायें। विज्ञान, हम सभी जानते हैं कि कुछ और नहीं मात्र ज्ञान है तथा हम सभी के लिए देश के प्रत्येक व्यक्ति तक इस ज्ञान के महत्व को पहुंचाना एक वास्तविक चुनौती है और निस्केयर सम्बन्धित तथा सटीक सूचना की समयोचित सुलभता प्रदान कर आर्थिक, सामाजिक, औद्योगिक तथा वैज्ञानिक एवं व्यावसायिक विकास में सुविधा प्रदानकर्ता के रूप में कार्य कर रहा है।**

उन्होंने इंगित किया कि **विज्ञान संचार तथा सूचना स्रोत प्रबन्धन में मानव संसाधन का विकास बहुत महत्वपूर्ण है।** इस सन्दर्भ में उन्होंने सुझाव दिया कि **निस्केयर के कार्यक्रमों यथा एसोसिएटशिप इन इन्फॉर्मेशन साइंस (एआईएस) को और अधिक लोकप्रिय बनाया जाना चाहिए। अधिक से अधिक व्यक्तियों को इन कार्यक्रमों में भाग लेना चाहिए।**

उन्होंने सूचित किया कि **इग्नू विज्ञान संचार में दो पूर्णकालिक सर्टिफिकेट/डिप्लोमा/डिग्री पाठ्यक्रमों का आयोजन कर रहा है तथा बहु बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने इन पाठ्यक्रमों में अपनी अभिरुचि व्यक्त की है। इग्नू निस्केयर जैसे संस्थानों को ऐसे पाठ्यक्रमों के आयोजन के लिए आमंत्रित करता है। यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है कि वह विज्ञान को समझकर अधिक प्रभावशाली ढंग से जनसामान्य में विज्ञान का संचार करने के योग्य हो सकें,** उन्होंने कहा।

प्रो. पिल्लै ने आगे कहा कि **दैनिक दिनचर्या में विज्ञान के अनुप्रयोग के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में भी वैज्ञानिक तथा तकनीकी सूचना की सुलभता प्रदान करने पर जोर**

निस्केयर में सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह के दौरान मंच पर बैठे हैं (बायें से) डॉ. के.के. कक्कड़, श्री एस.के. रस्तोगी, मुख्य अतिथि प्रो. वी.एन. राजशेखरन पिल्लै तथा श्री प्रदीप बनर्जी

निस्केयर की वार्षिक रिपोर्ट 2007-08 विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि

विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थी निस्केयर के संग्रहालय में प्रदर्शों को देखते हुये

डालना चाहिए। हमें जनसामान्य को विज्ञान तथा तकनीकी सूचना के प्रसार के लिए सभी प्रौद्योगिक सक्षमताओं का प्रयोग करना चाहिए ताकि राष्ट्रीय विकास में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का अधिकतम प्रभाव हो सके। इससे पूर्व, श्री एस.के.रस्तोगी, कार्यकारी निदेशक, निस्केयर ने प्रो. पिल्लै को निस्केयर के प्रमुख कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए कहा कि संस्थान अपनी 17 अनुसंधान पत्रिकाओं के द्वारा देश के वैज्ञानिकों के लिए अन्तरराष्ट्रीय स्तर के विद्वतापूर्ण अनुसंधान संचार हेतु एक मंच प्रदान कर रहा है। इसके अतिरिक्त, निस्केयर दो सांराशित अनुसंधान पत्रिकाओं यथा इंडियन जर्नल साइंस एब्सक्ट्रैक्ट्स तथा मेडिसिनल एण्ड ऐरोमेटिक प्लान्ट्स एब्स्ट्रैक्ट्स का भी प्रकाशन कर रहा है। यह अपनी तीन लोकप्रिय विज्ञान पत्रिकाओं यथा साइंस रिपोर्टर, विज्ञान प्रगति तथा साइंस की दुनिया के द्वारा जनसामान्य के मध्य विज्ञान का लोकप्रियकरण कर रहा है। निस्केयर के इंडियन जर्नल ऑफ ट्रेडिशनल नॉलेज तथा मेडिसिनल एण्ड ऐरोमेटिक प्लाट्स एब्सट्रैक्ट्स विकासशील देश की ऐसी दो अनुसंधान पत्रिकाएं हैं जिनको अन्तरराष्ट्रीय सर्च अथॉरिटी द्वारा पेटेण्ट देने से पूर्व प्रायर आर्ट सर्च के लिए प्रयुक्त की जाने वाली प्रायर आर्ट जर्नल्स की लोकप्रिय सूची में सम्मिलित किया गया है, निस्केयर एक नेटवर्क परियोजना, सीएसआईआर ई-जर्नल्स कन्सोर्टियम को भी कार्यान्वित कर रहा है, जिसने सीएसआईआर के वैज्ञानिकों को 4200 से भी अधिक एस एण्ड टी जर्नलों तथा विभिन्न डेटाबेसों तथा मानकों यथा वेब ऑफ साइंस, डर्वेन्ट इनोवेशन डेटाबेस, डॉल्फिन तथा एएसटीएम व भारतीय मानकों पर सुलभता प्रदान की है। श्री प्रदीप बैनर्जी, वैज्ञानिक-जी, निस्केयर ने स्वागत अभिभाषण दिया तथा मुख्य अतिथि का परिचय कराया। डॉ. के.के. कक्कड़, वैज्ञानिक, निस्केयर ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

समारोह का समापन एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ हुआ जिसमें निस्केयर स्टाफ के परिवार के सदस्यों ने भी भाग लिया। स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी इस अवसर पर पुरस्कार प्रदान किये गये।

सीरी में सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान(सीरी), पिलानी, में 26 सितंबर 2008 को सीएसआईआर के 67वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में एक भव्य समारोह आयोजित किया गया जिसमें संस्थान के पूर्व वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. जीवन प्रकाश रैना मुख्य अतिथि थे। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के पूर्व वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. श्याम सुंदर अग्रवाल ने की। समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि द्वारा दीप प्रज्जवलन से हुआ। दीप प्रज्जवलन के उपरान्त सीरी विद्या मंदिर के विद्यार्थियों द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई।

कार्यक्रम के आरंभ में अपने स्वागत उद्बोधन में संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक श्री राहुल वर्मा ने मुख्य अतिथि, अध्यक्ष एवं अन्य गणमान्य अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया। तदुपरांत उन्होंने मुख्य अतिथि तथा अध्यक्ष महोदय का परिचय दिया।

इसके उपरांत संस्थान के निदेशक डॉ. चंद्रशेखर ने परिषद के गठन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं इसमें परिषद के संस्थापक डॉ शांतिस्वरूप भटनागर के अनुकरणीय योगदान की विस्तृत चर्चा की। उन्होंने कहा कि स्वतंत्र भारत में सीएसआईआर ही ऐसा शोध संगठन है जो देश के अन्य शोध संगठनों का जनक है। देश में अत्याधुनिक शोध संगठनों की नींव सीएसआईआर द्वारा ही रखी गई थी। उन्होंने बताया कि 1942 में जहाँ एक ओर स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा अंग्रेजो, भारत छोड़ो आंदोलन चलाया जा रहा था वहीं दूसरी ओर देश के नीति निर्धारकों एवं नियोजनकर्ताओं द्वारा आधुनिक भारत के निर्माण के सपने को साकार करने के लिए सीएसआईआर जैसे संगठन की स्थापना भी की जा रही थी। इसके पीछे एक ही उद्देश्य था कि स्वतंत्र भारत में हमें वैज्ञानिक स्वतंत्रता भी मिलनी आवश्यक है ताकि हम अपने देश का विकास अपने हिसाब से कर सकें। इसी सोच के परिणामस्वरूप सीएसआईआर की स्थापना 1942 में आज ही के दिन हुई। आज यह वैज्ञानिक संगठन विश्व के बड़े शोध संगठनों में से एक है। आज सीएसआईआर में लगभग 19500 सहकर्मी हैं जिनमें 4500 वैज्ञानिक, 10000 तकनीकी कर्मचारी तथा 5000 अन्य सहकर्मी हैं जो सीएसआईआर की देश भर में फैली 37 प्रयोगशालाओं तथा 40 प्रसार केन्द्रों में समर्पित भाव से कार्य करते हुए सीएसआईआर को अंतरराष्ट्रीय स्तर तक ले जाने के लिए कटिबद्ध हैं।

उन्होंने सीएसआईआर की उपलब्धियों के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि सीएसआईआर ने जहाँ एक ओर उच्च तकनीकी शोध कार्य किया है वहीं दूसरी ओर आम जनता से जुड़े कार्यों को भी सफलतापूर्वक पूर्ण किया है। उन्होंने इस अवसर पर उपस्थित जनसमुदाय को बताया कि मतदान के लिए स्याही, अमूल पाउडर, स्वराज-सोनालिका एवं कृषि शक्ति ट्रेक्टर, हंस-सारस जैसे हल्के विमान, स्वदेशी सुपर कम्प्यूटर परम, टिश्यू कल्चर, हैजे के टीके, डीएनए फिंगर प्रिंटिंग, चीनी-चाय व खान, कृषि आधारित उत्पादों के लिए विभिन्न प्रणालियाँ, इंडिया मार्क II हैण्ड पंप, स्वराज उद्योग के लिए स्वचालित नियंत्रण तंत्र, चमड़ा, कोयला तथा तेल शोधक कारखानों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रौद्योगिकीयों का विकास, अस्थमा, मलेरिया आदि की प्रभावी औषधियों का विकास आदि कार्य सीएसआईआर की ही देन हैं। इसके अतिरिक्त आइएसटी (समय, माप-तौल) तथा विभिन्न वैज्ञानिक मानकों के निर्धारण में सीएसआईआर एक संरक्षक की भूमिका निभा रहा है।

इस अवसर पर उन्होंने सीरी द्वारा अर्जित उपलब्धियों की भी संक्षिप्त जानकारी दी। अंत में उन्होंने सहकर्मियों का आह्वान करते हुए कहा कि हम लोगों का दायित्व है कि हम सभी लोग टीम भावना, परस्पर सहयोग तथा तालमेल के साथ रचनात्मक ढंग से संस्थान के हित में कार्य करें और संस्थान के निर्धारित उद्देश्यों को पूरा करने में भरपूर योगदान दें।

मुख्य अतिथि डॉ. जीवन प्रकाश रैना ने अपने मुख्य अतिथीय संबोधन में कहा कि पिलानी में उनका आगमन अपने घर आने के समान है क्योंकि इसी संस्थान से उन्होंने अपने व्यावसायिक शोध जीवन का शुभारंभ किया था। आज 31 वर्षों बाद भी वे ऐसा महसूस करते हैं कि उन्होंने इस संस्थान को वैसा ही पाया जैसा कि यह संस्थान उनके समय में हुआ करता था। यह संस्थान सीएसआईआर की उपलब्धियों की सूची में प्रथम स्थान पर है जिसने स्वदेशी टेलिविज़न (श्वेत-श्याम व रंगीन) का विकास किया था। उनके अनुसार 1961 से 1979 तक उनका पिलानी

प्रवास उनके परिवार के लिए स्वर्ण काल था जिसमें उन्होंने कई उल्लेखनीय उपलब्धियाँ अर्जित कीं। अतः वे सदैव पिलानी से जुड़े रहे।

संस्थान की प्रयोगशालाओं में चल रहे शोध कार्यों की प्रगति तथा उपलब्धियों को देख कर उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की। उनके अनुसार इसका श्रेय डॉ चंद्रशेखर की दूरदृष्टि, मार्गदर्शन, कुशल नेतृत्व एवं संस्थान सहकर्मियों के अथक प्रयासों को जाता है। उन्होंने इस अवसर पर सभी सहकर्मियों को शुभकामनाएँ एवं बधाई देते हुए कहा कि हम सभी को सीएसआईआर तथा सीरी की उपलब्धियों पर गर्व है परंतु अब हमें वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान स्थापित करने के लिए कार्य करना है ताकि विदेशी शोध संस्थान हमारा अनुकरण करें।

उन्होंने स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि इस तरह की विलक्षण प्रतिभाएँ बड़े शहरों में मुश्किल से ही मिलती हैं। उन्होंने इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ चंद्रशेखर एवं समस्त सीरी परिवार को उन्हें आमंत्रित करने के लिए आभार व्यक्त किया तथा संस्थान के सभी सहकर्मियों को पुनः परिषद स्थापना दिवस की बधाई दी। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. श्याम सुंदर अग्रवाल ने सीरी परिवार के प्रति आभार व्यक्त किया कि इस अवसर पर उन्हें आमंत्रित करके संस्थान ने उन्हें गौरव प्रदान किया है। उन्होंने भी वर्ष 1971 से 1979 तक के अपने संक्षिप्त पिलानी प्रवास को याद करते हुए कहा कि पिलानी हमारी कर्मभूमि रही है। जो भी कुछ हमने सीखा अथवा जो भी प्रगति की वह इसी संस्थान के सहकर्मियों के आशीर्वाद, सहयोग एवं शुभकामनाओं का परिणाम था। यह संस्थान एक विशिष्ट संस्थान है जिसका स्वरूप अन्य शोध संस्थानों से बिलकुल अलग है।

इस संस्थान में शोध कार्यों में निरंतर प्रयास करने तथा अपने शोध कार्यों को अंतिम उपयोगकर्ता तक ले जाने के लिए वचनबद्धता निभाने की परंपरा रही है। इसी कारण यह संस्थान इलेक्ट्रॉनिकी शोध क्षेत्र में देश के अग्रणी संस्थानों में गिना जाता है। विगत वर्षों में संस्थान द्वारा अर्जित उपलब्धियों के बारे में जानकर तथा विभिन्न प्रयोगशालाओं का भ्रमण करने से उन्हें एक सुखद आश्चर्य हुआ कि इस संस्थान ने विगत वर्षों में उच्च शोध क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। इन उपलब्धियों का श्रेय वर्तमान निदेशक डॉ चंद्रशेखर एवं समर्पित सहकर्मियों को जाता है।

इस अवसर पर उन्होंने आधुनिक भारत के निर्माता पं जवाहर लाल नेहरू के कुछ प्रसिद्ध उद्धरणों द्वारा भारतीय शोध संस्थानों की स्थापना एवं उनके उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह संस्थान हमारे देश का गौरव है और उन्हें पूर्ण विश्वास है कि निकट भविष्य में यह संस्थान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान स्थापित कर लेगा।

आज के बदलते परिवेश में हमारे सामने नई तरह की चुनौतियाँ हैं जिनमें शोध कार्य के लिए बहुआयामी शोध की आवश्यकता होती है। कोई भी उत्पाद कई प्रौद्योगियों की सहायता से तैयार किया जाता है। उदाहरणार्थ मोबाइल फोन में 4000 विभिन्न प्रौद्योगिकियों का उपयोग किया गया है। आज हमें उत्कृष्ट संस्थानों तथा दक्षता प्राप्त अनुभवी जनशक्ति को जोड़कर संयुक्त रूप से कार्य करने की आवश्यकता है और हम लोग इसी दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। आज विश्व हमारी जनशक्ति का लोहा मानता है परंतु हमारी युवा जनशक्ति वही कार्य करती है जो विदेशी कंपनियाँ उनसे करवाना चाहती हैं। अतः समय की मांग है कि हम अपने देश की आवश्यकताओं के अनुरूप शोध कार्य करें ताकि जो हम चाहें वह कर सकें।

युवा पीढ़ी का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि इस संस्थान में हम अपने तन-मन से कार्य करें ताकि हम जहाँ भी जाएं वहां इस संस्थान व सीएसआईआर का नाम रोशन हो सके। अंश में उन्होंने स्वयं को इस विशिष्ट अवसर पर यहाँ आमंत्रित कर सम्मानित करने के लिए संस्थान निदेशक के प्रति पुनः आभार व्यक्त किया तथा सभी सहकर्मियों को स्थापना दिवस की हार्दिक बधाई दी।

स्थापना दिवस समारोह में मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि महोदय द्वारा सीरी परिवार के सदस्यों को पुरस्कृत भी किया गया। इसके उपरांत निदेशक महोदय ने मुख्य अतिथि डॉ. जीवन प्रकाश रैना एवं डॉ. श्याम सुंदर अग्रवाल, को सीएसआइआर स्थापना दिवस का स्मृति चिह्न व शॉल भेंट किया।

कार्यक्रम का संचालन संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक श्रीयुत श्रीनिवासन रघुनाथ ने किया। कार्यक्रम के अंत में उन्होंने धन्यवाद ज्ञापन में मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथि महोदय के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया तथा इस आयोजन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग देने के लिए समस्त सहकर्मियों को हार्दिक धन्यवाद दिया। समारोह का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

केन्द्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन, चंडीगढ़ में हिन्दी दिवस समारोह

सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में इंटरनेट पर अपनी व्यापक उपस्थिति दर्ज करवा चुकी हिन्दी की स्थिति अब सरकारी कार्यालयों में भी बेहतर हो रही है। यह विचार डॉ. चन्द्र त्रिखा, वरिष्ठ पत्रकार एवं प्रतिष्ठित हिन्दी लेखक ने 12 सितम्बर, 2008 को संगठन में आयोजित हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर व्यक्त किए। उन्होंने कम्प्यूटर पर हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं में कार्य करने की सरल पद्धति यूनिकोड की विस्तृत जानकारी देते हुए सरकारी कार्यालयों में इसके व्यापक प्रयोग करने पर बल दिया।

संगठन स्टाफ को हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने के लिए दिनांक 1-12 सितम्बर, 2008 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। डॉ. बी.एस. चवन, प्रमुख, साइकेट्री विभाग, राजकीय चिकित्सा कॉलेज एवं अस्पताल ने सीएसआईओ में हिन्दी पखवाड़े को औपचारिक रूप से प्रारम्भ किया। इस अवसर पर उन्होंने अपने सम्बोधन में **तनाव के कारण एवं निवारण** के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी उपलब्ध करवाई। संगठन में हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर इस वर्ष 10 हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। वैज्ञानिक एवं तकनीकी स्टाफ के लिए विशेष रूप से पेपर रीडिंग व शब्द ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में 100 स्टाफ कर्मियों ने भाग लिया तथा 33 कर्मियों को पुरस्कृत किया गया। संगठन के दो कर्मियों को हिन्दी उल्लेखनीय कार्य करने के लिए नकद राशि प्रदान कर पुरस्कृत किया गया।

संगठन में गत 4 वर्षों से स्टाफ के बच्चों द्वारा कक्षा 4 से 12 में हिन्दी विषय में निर्धारित अंक प्राप्त करने पर रु. 200/- का नकद पुरस्कार प्रदान करने की योजना भी लागू की गई है। इस वर्ष इसकी प्रोत्साहन राशि बढ़ाकर रु. 250/- प्रति विद्यार्थी कर दी गई तथा इसमें 41 विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। डॉ. पवन कपूर, निदेशक सीएसआईओ ने वर्ष 2008 में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं स्टाफ कर्मियों के बच्चों को नकद पुरस्कार प्रदान किए। श्री एम.आर. मसान, प्रशासन नियंत्रक ने कार्यक्रम के अन्त में औपचारिक रूप से धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर निदेशक डॉ. पवन कपूर संगठन कर्मियों को सम्बोधित करते हुये

एनएएल, बंगालुरु में हिन्दी पखवाड़ा समारोह

एनएएल, बंगालुरु में 25 अगस्त 2008 से 11 सितम्बर 2008 तक हिन्दी पखवाड़ा हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। एनएएल इस वर्ष अपना स्वर्ण जयन्ती वर्ष मना रहा है, इस उपलक्ष्य में 25 से 27 अगस्त तक एनएएल ने बंगालुरु स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच तीन अन्तर कार्यालयीन प्रतियोगिताएं - हिन्दी एकल गायन प्रतियोगिता, हिन्दी आशुभाषण प्रतियोगिता, हिन्दी वर्ग पहेली प्रतियोगिता आयोजित कीं।

हर वर्ष की भांति केन्द्रीय विद्यालय एनएएल कैम्पस के विद्यार्थियों के लिए भी तीन प्रतियोगिताओं - हिन्दी पोस्टर लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी निबन्ध लेखन प्रतियोगता और हिन्दी कविता लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

28 अगस्त को ग्रुप-III (3) एवं III (4) के तकनीकी अधिकारियों के लिए एक हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें बीईएमएल, बंगालुरु के हिन्दी अधिकारी श्री गोपालकृष्णन अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित किये गये।

श्री गोपालकृष्णन ने भारत संघ की राजभाषा नीति के संबंध में ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया। उन्होंने तकनीकी क्षेत्र में हिन्दी के प्रयोग से संबंधित व्यावहारिक उपाय सुझाते हुए प्रोत्साहन योजनाओं की जानकारी दी।

16 सितम्बर 2008 को अप.2.30 बजे एनएएल के एस.आर. वैल्लूरि आडिटोरियम में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। डॉ. ए.आर. उपाध्या, निदेशक ने इस समारोह की अध्यक्षता की। डॉ. शंकर प्रसाद, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), एचएएल कॉरपोरेट कार्यालय, बंगालुरु इस

एनएएल में हिन्दी दिवस समारोह का एक दृश्य

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। श्री शेखर आनन्दन के प्रार्थना गीत से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। एनएएल की वरिष्ठ प्रशासन नियंत्रक, श्रीमती रमा महादेव ने स्वागत भाषण दिया।

इस वर्ष का हिन्दी दिवस विशेष तकनीकी व्याख्यान डॉ. जयदीप सहाय माथुर, वैज्ञानिक, सीटीएफडी ने दिया। उन्होंने **वायुयान के अनुसंधान एवं विकास में अभिकलनीय तरल गतिकी की भूमिका** पर सरल एवं सुबोध हिन्दी में मल्टीमीडिया की मदद से रोचकतापूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किया। इसके उपरान्त मुख्य अतिथि डॉ. शंकर प्रसाद ने हिन्दी में प्रकाशित निदेशक की रिपोर्ट 2007-08 का विमोचन किया और सभा को सम्बोधित किया। डॉ. शंकर प्रसाद ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमें अपनी भाषा पर गर्व करना चाहिए और हिन्दी में काम करना आरम्भ करना चाहिए।

तत्पश्चात डॉ. ए.आर. उपाध्या ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि जहां तक दैनिक सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग की बात है पहले उच्च अधिकारी स्वयं पहल करें। हिन्दी में काम करना आसान है, देरी केवल शुरूआत की है।

मुख्य अतिथि ने इस अवसर पर कार्यालयीन एवं अन्तर-कार्यालयीन हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को, 2007-08 में दसवीं कक्षा में हिन्दी विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाले बच्चों को, केन्द्रीय विद्यालय में एनएएल के तत्वावधान में आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेता छात्रों को, हिन्दी प्रबोध/प्रवीण परीक्षाओं में अच्छे अंकों के साथ पास करने वाले कर्मचारियों को, तकनीकी लेख एवं परियोजना दस्तावेज हिन्दी में लिखने वाले वैज्ञानिकों को तथा सरकारी कामकाज में हिन्दी का उल्लेखनीय प्रयोग करने वाले कर्मचारियों को नकद पुरस्कार प्रदान किए।

तत्पश्चात मुख्य अतिथि ने उन्नत सम्मिश्रण प्रभाग को उत्तम राजभाषा विभाग पुरस्कार और भण्डार एवं क्रय अनुभाग को उत्तम राजभाषा अनुभाग पुरस्कार प्रदान किए। अन्त में एनएएल के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डॉ. प्र. श्री. मूर्ति ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

सीसीएमबी में हिन्दी दिवस का आयोजन

हर वर्ष की तरह इस बार भी सीसीएमबी में हिन्दी दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। दिनांक 22 अगस्त, 2008 को बीआईसी समिति कक्ष में निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में स्टॉफ सदस्यों तथा शोध छात्रों ने भाग लिया। निबन्ध प्रतियोगिता के विषय थे- 1. वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की आवश्यकता 2. भारत के सन्दर्भ में चन्द्रयान की उपयुक्तता। दिनांक 25 अगस्त, 2008 को स्मृति प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें प्रशासन/भंडार एवं क्रय आदि अनुभागों के कर्मचारियों के साथ शोध छात्रों ने भी भाग लिया।

दिनांक 15 सितम्बर को हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. सौम्या मिश्रा, आईपीएस, डीआईजी, आन्ध्र प्रदेश विशेष पुलिस बटालियन, समारोह की मुख्य अतिथि थीं। उन्होंने इस संदर्भ में **वर्तमान परिस्थितियों में सुरक्षा की स्थिति** विषय पर हिन्दी में अपने विचार व्यक्त किए। हिन्दी माह के दौरान आयोजित विविध प्रतियोगिताओं के विजेताओं को इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार प्रदान किये गये।

हिन्दी दिवस की समाप्ति रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ हुई। प्रथम चरण में गीत और हास्य रचनाएं प्रस्तुत की गई तथा दूसरे चरण में शोध छात्रों द्वारा **हम सब एक हैं** नीति परक एकांकी तथा हास्य नाटक **गधे की सवारी** का मंचन किया गया।

राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), डॉ. के.एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली-110012 के लिए दीक्षा बिष्ट द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, निस्केयर प्रेस द्वारा मुद्रित।

संपादकः दीक्षा बिष्ट; अनुवादः मीनाक्षी गौड़; डिजाइन एवं ले आउटः मलखान सिंह; कम्पोजिंगः कृष्णा

फोनः 25848702, 25846301, 2584303, 25842990, 25846304-7/361 ग्रामः PUBLIFORM. New Delhi; फैक्सः 25847062

ई-मेलः deeksha@niscair.res.in वेबसाइटः http://www.niscair.res.in पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में फोन नं. 25841647 पर सम्पर्क करें